SAARATH KUMAR
SECOND YEAR BS.C ZOOLOGY

दृश्य माध्यमों का संस्कृति पर प्रभाव

संस्कृति को किसी परिभाषा में बाँधना कठिन है । संस्कृति किसी क्षेत्र विशेष में रह रहे लोगों के रहन-सहन, जीवन शैली, खान-पान, नृत्य संगति, उनके विचारों को मिलकर बनती है । आर्यकाल से मुगलों के आगमन तक भारत में कई संस्कृतियाँ पनपी भारत की इसी सांस्कृतिक विभिन्नता को हमारा मूल माना जाता है । तभी तो शायद कवि इकबाल न कहा था ।

"मिस्त्र ईरान, रोमा सब मिट जाए जहाँ से
कुछ बात है की हस्ती मिटती नहीं हमारी"

समय के साथ-साथ दृश्य माध्यमों का जैसे दूरदर्शन, सिनेमा, इन्टरनेट आदि का काफी विकास हुआ जिसका हमारी संस्कृति पर अच्छेऔर बुरे दोनों प्रभाव पड़े । अगर इसके बुरे पक्षों को गिना जाए तो यह कहा जा सकता है कि यह हमारी संस्कृति की कब्र खोद रहा है । इसका सीधा सा उदाहण हम अपने जीवन में देखते है, पहले जब एक बेटा अपनी माँ से मिलने जाता या तो पैर छुकर आशीर्वाद ग्रहण करता था आज जब वही बेटा अपनी माँ से पूछता है "हैली मौम आऊँ डु यु डू" और उसको चुमता है । ऐसे संस्कार तो हमारी सभ्यता में नहीं थे, हमें आज तक यही सिखाया गया है बड़ों के सामने विनम्र रहो तथा उनका आदर करो । इस बात से हमें पता चलता है की आज युवा पीढ़ी पूर्वजों द्वारा सिखायी गई बातों को दकियानूसी मान कर उन्हें छोड़ती चली जा रही है ।

दूरदर्शन के प्रचार प्रसार से हमारी शास्त्रीय कलाएँ, शास्त्रीय संगीत तक्षा शास्त्रीय नृत्य का भविष्य अंधकारमय नज़र आ रहा है । हमारी लोक कलाओं का अस्तित्व लगभग समाप्ति के कगार पर है, हमारे लोक कलाकार सड़क पर आ गए है तथा वे सांस्कृतिक अवहेलना के प्रत्यक्ष उदाहरण बनकर आज हमारे सामने है । सिनेमा का विस्तार भी हमारी संस्कृति पर एक गहरा आघात साबित हुआ । पहले जहाँ हरिश्चन्द्र जैसी पौराणिक तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित फिल्मे बनती थी आज उन्हीं का स्थान ऐसी फिल्मों ने ले लिया है जिसका पूरे परिवार के साथ एक साथ बैठ कर देख पाना भी मुश्किल है । एक शोध के अनुसार यह पाया गया है जब बच्चे फिल्मों में मारधाड़ आदि देखते है तो वे इसे अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करते हैं जिसके कारण जैसे-जैसे के बड़े होते है यह भावना भी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करती है और वे हिंसक प्रकृति के हो जाते है जो समाज के लिए खतरनाक है । आजकल के सिनेमा में संगीत के नाम पर कान का पर्दा हिला देने वाला शोर और नृत्य के नाम पर बंदरों जैसी उछल कूद जो की हमारे शास्त्रीय नृत्यों का अपमान है । सिनेमा के कारण भारतीयों के पहनावे में भी काफी अंतर आया है पहले हमारे पहनावे में सादगी झलकती थी पर आजकल यह सादगी जाती रही है और कपड़े दिनोदिन छोटे होते जा रहे है । इसे हम विदेशी सभ्यता का अँधा अनुकरण कह सकते है ।

दृश्य माध्यमों के विकास के कारण एक बड़ा नुकसान यह रहा की लोगों के पास एक दूसरे के लिए समय ही नहीं बचा है । अगर आजकल हमारे घर कोई आ जाता है तो हमें कितना गुस्सा आता है कारण बस इतना ही टी.वी पर आपकी पसंद का कार्यक्रम चल रहा है । कार्यक्रम की चिंता में हम मेहमान की अवहेलना कर डालते है, मेहमानों को अपमानित होकर जाता पडता है । भारत में पहले मेहमानो को भगवान् समझा जाता था (अतिथि दैवों भव) पर इस समय मेहमान हमें शैतान दिखाई पड़ता है । आजकल भारत के घरों ने एक चलन देखने को मिलता है, गृहणीयाँ खाना बनाते

समय एक टी.वी देखती रहती है जिनसे तो कई बार उनके हाथ तक जल जाते है । आधुनिक युग इंन्टरनेट का युग कहलाता है भारत सहित अन्य विकासशील देशों पर भी इंन्टरनेट अपना शिकजा कसता जा रहा है । जहाँ पहले लोग चिट्ठी लिखना पसंद करते थे वहीं आज सब ई-मेईल के पीछे पड़े है । ई मेईल से किसी तक हमारे विचार तो पहुँच सकते है पर भावनाएँ नहीं । इन्टरनेट का यह विस्तार हमारे युवाओं को नैतिक रूप से अपंग बना रहा है । इन्टरनेट के कई उपयोग है पर ज्यादातर युवा इसका प्रयोग अश्लील चित्रों को देखने केलिए करते हैं । पिछले दिनों ही अख़बारों की सुर्ख़ियों में एक ख़बर थी, अश्लील वेबसाइट बनाने के जुर्म में एक बच्चा गिफ्तार । यह घटना साफ तौर पर यह बताती है कि हमारा कितना नैतिक पतन हो चुका है ।

दृश्य माध्यमों के विकास से पाश्चात्य संस्कृति को काफी बढ़ावा मिला, इसका पत्यक्ष उदाहरण है वेलन्वइंस डे । चार साल पहले तक भारत में वेलन्टाइंस डे के बारे में कोई नहीं जनता था पर दृश्य माध्यमों ने इस दिन की इतनी बढ़ चढ़कर महिमा गायी की अब यह भारतीय संस्कृति में एक आडंबर बनकर छा रही है । इससे भी बड़ी विडंबना यह है लोगों को विदेशी रोमियो और जुलियट तो याद है पर अपने ही देश के हीर राझाँ तथा सलीम उनारकली हमें याद नहीं । लोग अगर प्यार की कसमें भी खाते है तो रोमियो और जुलियट के नाम की न की हीर राँझे की । यह हमारे लिए बडी शर्म की बात है ।

यह बात नहीं है की दृश्य माध्यमों के सिर्फ नुकसान ही है इसके कई फायदे भी है ऐसे कुछ टी.वी चैतल है जितमें सिर्फ, सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाए जाते हैं, ऐसे कई वेबसाइट है जिनसे हम विभिन्न प्रान्तों तथा देशों की संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । भारत के लोगों को सिर्फ अपनी विचारधारा बदलती चाहिए तथा जो भी यह दृश्य माध्यम दिखाए उनका अँधा अनुकरण नहीं करना चाहिए । हमें अपने विवेक का उपयोग कर इनसे अच्छी बातें ग्रहण करती चाहिए । हमें कभी भी अपनी संस्कृति को दूसरों से हीन नहीं मानना चाहिए । अगर हम इनसे सिर्फ अच्छी बातों ही ग्रहण करेंगे तो हमारी संस्कृति बची रहेगी तथा बदलाव भी आएँगे पर यह बदलाव हमारे लिए अच्छे रहेंगे । हर भारतवासी को इसे अपना फर्ज़ मानना चाहिए तभी भारत सांस्कृतिक रूप से सर्वोत्तम कहलाएगा । ●

(I Prize in Interzone competition Hindi Essay writing)

RADHIKA. M.

SECOND YEAR BS.C ZOOLOGY

निराशा से आशा तक

राजीव अपने कमरे में बैठा सामने की दीवार को टुकुर-टुकुर देखे जा रहा था । उसके सामने उसकी हिन्दी की किताब खुली पड़ी थी जिसके पन्ने पंखे की हवा के कारण पलटते जा रहे थे । पर शायद उसका मन पढ़ाई में नहीं था, दूर कहीं किसी निराशा के समुद्र में डूबा हुआ सा लगता था वह ।

राजीव जिसे घर में उसकी माँ और दादी प्यार से मुन्ना कहकर पुकारती है और पिता जी स्नेह भरे कड़कपन से 'राजू' बुलाते हैं । राजू और सीरत से भोला-भाला है । पढ़ने में भी ठीक-ठाक है । पर किसी ने कभी भी उसे दूसरे बच्चों के साथ मिलता जुलता या हँसता-बोलता नहीं देखा था । वह चुपचाप कहीं बैठा रहता या यूँ ही गुमसुम, निराश, हताश सा । उसकी आँखों में हमेशा एक खालीपन रहता था जैसे उसने अपने इस 10 साल के जीवन में कुछ न पाया हो । शायद, उसकी इस अवस्था कार कारण यह था कि उसकी एक टाँग पोलियो का शिकार हो बेजान हो चुकी थी जिस कारण वह लँगडाकर चलता था, उसकी आँखें भी कमज़ोर थीं इसलिए अपनी छोटी सी नाक पर हमेशा मोटा-मोटा चश्मा चढ़ाए रहता था । वह दूसरे बच्चों की तरह-खेल-कूद नहीं सकता था । इसलिए वह हमेश हँसते-खेलते हमउम्र बच्चों को घूरता रहता था और उनसे ईर्ष्या करते लगा था । उसके कुछ शरारती सहपाठी उसे "लँगडा" और चश्मुद्दीन कहकर भी पुकारते थे । इस कारण भी वह अपने साथियों से बैर रखने लगा था । वह हमेशा यह सोचता रहता था कि भगवान ने सिर्फ उसके साथ ही ऐसा क्यों किया, उसे ही लँगड़ा और काना बना दिया । घर में चाहे उसे कितना ही प्यार क्यों न मिलता वह सिर्फ यह सोचता था कि ये सब उसके लँगड़ा होने के कारण उसपर दया दिखाने के रास्ते हैं ।

ऐसे में एक दिन उन्हें पढ़ाते सुशीला नाम की एक नई अध्यापिका आई । एक दिन पढ़ाते समय उन्होंने देखा कि राजीव खिडकी से बाहर देखा रहा है । उन्होंने उसे बुलाया और बड़े प्यार से पढ़ाई की ओर ध्यान देने को कहा । राजीव अध्यापिका की बात सुनकर कुछ देर तो पढ़ाई में ध्यान दे गया पर फिर अपने आप को खिड़की से बाहर देखने से नहीं रोक पाया । ऐसी बात नही थी कि वह सुशीला मेडम को पसंद नहीं करता था, पर बात यह थी कि खिड़की से देखने पर वह मैदान में हँसते-खेलते अपने जैसे बच्चों को देख सकता था जो वह सब कुछ कर रहे थे वह नहीं कर सकता था । उसकी आँखों में आँसू भर आते पर वह हर बार उन्हें रोक लेता था, बाहर बहने नहीं देता था । पर फिर भी उससे बाहर देखे बिना नहीं रहा जाता था ।

बार-बार कहने पर भी जब सुशीला जी ने यह देखा कि राजीव मान नहीं रहा है तब उन्हें बहुत गुस्सा आया और उन्होंने राजीव से कक्षा के सामने हाथ ऊपर करके खड़े हो जाने को कहा । जब राजीव लँगड़ाकर आने लगा तथी उन्हें यह मालूम हुआ कि राजीव का एक पैर बेजान है । उन्हें अपने कहे पर बहुत दुख हुआ और राजीव को वापिस अपनी जगह पर जा बैठ जाने को कहा । उस दिन से वे राजीव को देखने और समझने लगीं । वे उसके माता-पिता से मिली, उसके सहपाठियों से उसके बारे में पूछा तब उन्हें पता चला कि राजीव ऐसा क्यो है? और इसके बाद वह यह सोचने लगी कि राजीव के कैसे आत्मविश्वास का पाठ पढ़ाया जाए ।

एक दिन वे राजीव को एक अनाथालय ले गई । वहाँ उन्होंने उसका परिचय एक ऐसे बच्चे से कराया जो लँगड़ा और अँधा था । लेकिन फिर भी वह हँस बोल रहा था ऐसे जैसे कि उसे कोई तकलीफ़ ही न हो । उसने राजीव से जल्द ही बातचीत का सिलसिला शुरू कर दिया । दोनों हमउम्र तो थे ही साथ ही साथ राजीव को यह बड़ा अजीब लग रहा था कि उससे भी ज़्यादा तकलीफ में होने के बावजूद भी वह लड़का कैसे हँस बोल सकता है?

लौटते वक्त राजीव ने सुशीला जी से नंदन, जो कि उस लड़के का नाम था, के बारे में बहुत से सवाल पूछे । उस दिन राजीव ने अपने जीवन का शायद सबसे बड़ा पाठ पढ़ा था । आत्मविश्वास का पाठ जो वह जिन्दगी भर भूलने वाला नहीं था ।

दूसरे दिन जब सुशीला जी पढ़ाने के लिए पाँचवीं कक्षा की ओर बढ़ीं, तब उन्हें वहाँ से आता हुआ शोरगुल सुनाई पड़ा । पर इस शोरगुल में भी सबसे ऊँची, आवाज़ उसकी थी जिसे कल तक किसी ने हँसते-बोलते नहीं देखा था ।

MOHAN RAJ MENON
Dept. of Hindi

प्यार ही प्यार

कहते है लोग-मुझसा शख्स न देखा
हर एक अन्दाज़ मेरा अनोखा ।
चमकता चाँद; धधकता सूर
दोनों से हैं मुझको प्यार ।।

कभी शर्मा के, कभी इठलाके
चलती फिरती है नदियाँ ।
दाने की खोज में, गाने के मौज में
उड़ती चहकती हैं चिडियाँ ।।
नाचता मोर गरजता शेर
दोनों से हैं मुझको प्यार ।

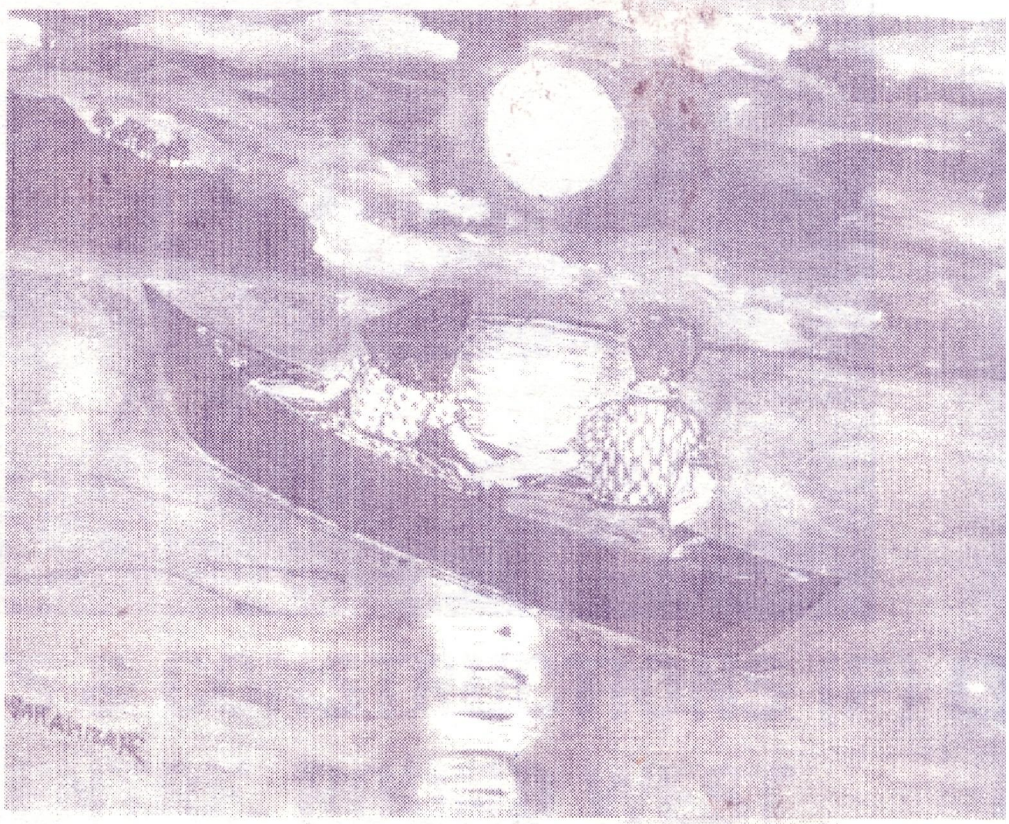

कभी शांत हो के, कभी शोर मचा के
गिरनेवाली बिजलियाँ ।
फूल की गोद में, झूल के मोद में
हँसनेवाली तितलियाँ ।।
फूँकता साँप, भटकता साँड
दोनों से हैं मुझको प्यार ।

कभी वार करके, कभी प्यार जता के
खुलती मींचती दो अखियाँ ।
जीने की राह में, पाने के मोह में
उभरती डूबती सौ खुशियाँ ।।
घूरता बाज, इमकता बाग
दोनों से है मुझको प्यार ।

ज़िन्दगी

MOHAMMED. I.K

First year B.Sc Chemistry

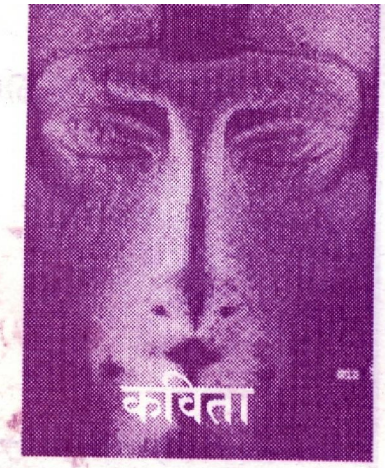

ज़िन्दगी है, यह ज़िन्दगी है ।
अनोखी यह ज़िन्दगी है ।
हर एक पल, हर एक दिन,
छाया यह नज़ारा है ।
कोई हँस रहा है, कोई रो रहा है,
फिर भी जीवन सबकों प्यारा है ।
गमों के अँधेरे में, खुशियों के उजियारे में,
पलती ज़िन्दगी को मैं क्या नाम दूँ ।
क्या यह जीवन भी कोई जीवन है,
इसमें भला मै क्या पैगाम दूँ ।
गमों को ठुकरा दो, खुशियों से भरलो,
प्यार करना हो तो सिर्फ जिन्दगी से कर लो ।
अदावत, नफ़रत, लालच और दिल्लगी से भरी है ज़िन्दगी,
मौहब्बत और दोस्ती से बन जाऐगी बहार यह ज़िन्दगी ।